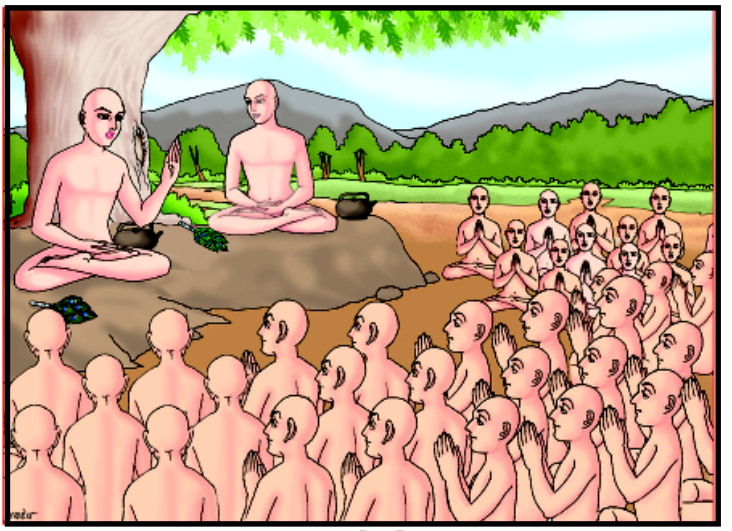

(E - 115)
ऐसे मुनिवर देखवें, वनमें

ऐसे मुनिवर देखें, वनमें.....(२)
जाके राग-द्वेष नहीं तनमें.....

ग्रीष्म ऋतु शिखर के उपर.....(२)
मगन रहे ध्याननमें.....१

चातुर्मास तरुतल ठाडे.....(२)
बुंद सहे छिन छिन में.....२

शीतमास दरिया के किनारे.....(२)
धीरज धारे ध्याननमें.....३

ऐसे गुरुको मैं नित प्रति ध्याउं.....(२)
देत ढोक चरणनमें.....४